Volume 1, Issue 1, 2026. pp. 105–113
Review Article

पूर्वी आ पछिमी सोचके मिलन

प्रकाश कट्टारी[1], **सञ्जय साह मित्र**[2]
[1]स्वतन्त्र अनुसन्धनकर्ता
[2]कवि, बाजिका भाषा समाज

Abstract

In this comparative assessment from an Eastern philosophical lens, Anjay Mishra, D.Litt., Nepal's preeminent scientist in management, offers a profound intellectual engagement with A Reference Book on Comparative Assessment from the Eastern Approach, transcending conventional Western critiques. Previously reviewed in British English, American English, and Nepali, the work now finds vibrant expression in Bajika—a vital Indo-Aryan language of the Madhesh region—revitalizing its cultural resonance and advocating for linguistic preservation amid globalization. Mishra deftly juxtaposes Eastern paradigms of holistic governance and ethical stewardship against the book's managerial frameworks, illuminating pathways for sustainable public administration in South Asian contexts. This Bajika rendition not only enriches schoaLrly discourse but also empowers indigenous voices, fostering intellectual pluralism and regional identity.

Keywords: book review, Bajika, east, west , pluralism

लेखक परिचय

Comparative Assessment from the Eastern Approach किताबके लेखक डा. अन्जय कुमार मिश्र प्रतिष्ठित शिक्षाविद, शोधकर्ता आ चिन्तक छत। मधेश विश्वविद्यालयके डीन डा. अञ्जयकुमार मिश्रके महाविद्यावारिधिके उपाधि प्राप्त भेल हए। भारतके कर्नाटकस्थित मंगलुरुमे रहल श्रीनिवास विश्वविद्यालयद्वारा डा. मिश्रके महाविद्यावारिधि उपाधिसे विभूषित कएलगेल हए। रौतहटके दुर्गा भगवती गाँओपालिका मत्सरी निवासी द्रवेश मिश्र आ सोनाबती मिश्रके सुपुत्र डा. अञ्जकुमार मिश्र विश्वविद्यालयके छात्रवृत्तिमे ही महाविद्यावारिधिके शोध कएले छथिन।

Article Info .

Article History
Received: 2026 January 12
Accepted: 2026 February 07

Email
qattari.p99@gmail.com

Cite
Kattari, P., Mitra, S. S. (2025). पूर्वी आ पछिमी सोचके मिलन. *Academic Journal of Simara*, *1*(1), 105–113.

पूर्वीय ज्ञान आ पछिमी विज्ञानके सन्तुलन जइसन गहन विषयपर भी मिश्र गहन अनुसन्धान कएले छथिन। हुन कानपुर विश्वविद्यालयसे प्रोजेक्त म्यानेजमेन्टमे पीएचडी प्राप्त कएले छथिन। अपन शैक्षिक यात्रामे हुन मदन भण्डारी मेमोरियल एकेडेमी नेपालमे सह–प्राध्यापक तथा अनुसन्धान निर्देशकके रूपमे काम कएलथिन, ओकराबाद काठमाडौं कलेज अफ म्यानेजमेन्टमे प्राध्यापकके रूपमे योगदान देलथिन ।

डा. मिश्र श्रीनिवास विश्वविद्यालयके रिसर्च प्रोफेसरसमेत छथिन । हुन म्यानेजमेन्ट एसोसिएसन अफ नेपालमे सक्रिय सदस्य रहेके साथे, विभिन्न अन्तर्राष्ट्रिय संस्थासे पनि आबद्ध छथिन। हुन असङ्ख्य अन्तर्राष्ट्रिय जर्नलके सम्पादक आ सलाहकारके रूपमे योगदान पुगएले छथिन। हुनकर ३०० से बेसी वैज्ञानिक लेख, ३० से बेसी किताब, १६ पेटेन्ट आ २५ कपिराइट प्रकाशित हए।

Copyright©2026: Author(s). Published by **Simara College**

डा. मिश्र २५ से बेसी अन्तर्राष्ट्रिय सम्मेलनमे अपन अनुसन्धान प्रस्तुत कएले छथिन आ १५० से बेसी शोधप्रबन्ध निर्देशन कएले छथिन । हुन अपन उत्कृष्ट योगदानके लेल विभिन्न राष्ट्रिय आ अन्तर्राष्ट्रिय पुरस्कार सऽ प्राप्त कएले छथिन । व्यवस्थापन क्षेत्रमे हुनकर योगदान आ प्रभावके कारण हुन नेपालके विश्वविद्यालय सबकै रैङ्किङमे अग्रणी वैज्ञानिकके रूपमे सुपरिचित छथिन । डा.मिश्रके विचार सऽ अत्यन्त मौलिक आ प्रेरणादायी छथिन । हुन पूर्वीय अध्यात्म आ पछिमी व्यवस्थापन सिद्धान्तबीचके सन्तुलन खोजइत समाज आ व्यवसाय दुनू क्षेत्रमे नयाँ दृष्टिकोण आ दिशा प्रदान कएले छथिन ।

विषय परिचय

शैक्षिक दृष्टिसे पूर्व आ पछिमी सोचके मिलन विषयक ग्रन्थ : *Comparative Assessment from the Eastern Approach* के समीक्षा करेके मुख्य कारण ई पूर्वीय आ पछिमी दार्शनिक, सांस्कृतिक आ व्यवस्थापन सोचबीचके अन्तरके एकीकृत करेके प्रयास कएले हए, से तथ्यके विश्लेषण करनाइ रहल हए । ई पुस्तक पूर्वीय आध्यात्मिकता आ पाश्चात्य तर्कशास्त्रके आधारभूत मतभेदसबके वैज्ञानिक आ व्यवस्थापकीय सन्दर्भमे पुनः मूल्याङ्कन कके सन्तुलन स्थापित करेवाला दृष्टिकोण प्रस्तुत कएले हए (Blair, 2023; Chhetri,2023) । साथे, मानव संसाधन व्यवस्थापनसे सम्बन्धित नैतिक पूँजी निर्माण आ व्यवस्थापनके प्रक्रियामे देखाइ परल चुनौती सबके गहन अध्ययन कके व्यावहारिक समाधानके सिफारिस सब गहन ढङ्गसे प्रस्तुत कएले हए । साथे, उक्त पुस्तकसे संस्थागत विकासमे योगदान पुगाबेवाला विभिन्न आयाम सऽ निर्धारण कएले मिलइअ (Mishra & Aithal, 2022a, 2022b, 2023) । शिक्षा क्षेत्रमे एकर प्रयोग आ प्रभावकारिताके मध्यनजर करइत, ई योग दर्शनमार्फत मानव विकासके आयाम सबके समिटले हए, जे समग्र विकासके लेल दीर्घकालीन दृष्टिकोण प्रदान करइअ (Shreshtha, 2025) । ई सभी पक्षके चलते ई पुस्तक पुनः अध्ययन कके पूर्व आ पछिमी सोचके समन्वयमार्फत नयाँ ज्ञान सिर्जना करेके आ ओकरा अपन तर्क तथा अभ्यासमे प्रयोग करनाइ आवश्यक रहल पुष्टि होइअ । एसे शैक्षिक अनुसन्धान तथा व्यावसायिक अभ्यास दुनूमे नवप्रवर्तन आ बहुआयामिक समग्रता लेआबेके महत्त्वपूर्ण योगदान पुगाबेके देखलगेल हए ।

पुस्तकके समीक्षा

ई पुस्तक विशेष कके पूर्वीय सभ्यता देसकेवाला आध्यात्मिकता, योग, ध्यान, नैतिकता आ जीवनदर्शनके महत्त्वके देखएले हए त पछिमी सभ्यता विकास कएले विज्ञान, प्रविधि, व्यवस्थापन आ औद्योगिक प्रगतिके प्रष्ट कएले हए । लेखकके विचारमे पूर्वीय दर्शन आदमीके आत्मिक शान्ति, नैतिक आधार आ करुणाके भाव देइअ, ई भौतिक उत्पादन आ आर्थिक समृद्धि लेआबे नसकले । दोसराओर, पछिमी दृष्टिकोण प्रविधि, दक्षता, औद्योगिकीकरण आ व्यवस्थापनके माध्यमसे जीवनके सुविधा आ भौतिक सम्पन्नता देबले लेकिन ई आदमीके आत्मिक रूपमे खाली बनादेबले ।

पुस्तकके लेखनशैली विश्लेषणात्मक, दार्शनिक आ तुलनात्मक हए । लेखक पूर्वीय अध्यात्म, योग आ नैतिकताके गहन व्याख्या करइत पछिमी विज्ञान, प्रविधि आ व्यवस्थापनके साथ तुलना कएले छत । लेखनशैली शैक्षिक रूपसे सुस्पष्ट, आदर्शपरक आ व्यावहारिक उदाहरणसबसे सजल हए, जे पाठकके समग्र दृष्टिकोण देइअ । एकर भाषाशैली विद्वतापूर्ण, औपचारिक आ प्रेरणादायी हए । एमे संस्कृत श्लोक, दार्शनिक कहावत, उदाहरण आ आधुनिक सन्दर्भसबके प्रयोग कएलगेल हए । भाषा सरल लेकिन गहन हए, जे शैक्षिक पाठकके आकर्षित करेके मात्र नहोके आम पाठकके स्पष्ट आ सहज ढङ्से बुझाइअ । एकर शब्द संरचना विद्वतापूर्ण आ सन्तुलित हए । संस्कृतके पदावली, अङ्ग्रेजी शैक्षिक शब्दावली आ सरल व्याख्यात्मक शब्द सबके संयोजन मिलइअ । वाक्य संरचना प्रायः लामा, व्याख्यात्मक आ विश्लेषणात्मक शैलीमे हए, जे तुलनात्मक तर्क प्रस्तुत कएले हए ।

लेखकके साहित्यिक सार अध्यात्म आ विज्ञानबीचके संवादमे निहित हए । पुस्तक दार्शनिक गहिराइ आ व्यावहारिक यथार्थके मिलाके एगो नवीन जीवन–दर्शन प्रस्तुत करइअ, जेमे पूर्वीय आत्मिक मूल्य आ पछिमी भौतिक प्रगतिके समन्वय कएल हए । संस्कृत श्लोक सबके

प्रयोगसे एकरा साहित्यिक आ सांस्कृतिक गहिराइ देइअ, जे पाठकके परम्परा आ आधुनिकताके बीचमे पुल बनादेइअ। लेखक कथ्यके विश्लेषणात्मक ढङमे अगाडि बढएलापर भी शैलीमे प्रेरणा, आदर्श आ सामाजिक सुधारके आह्वान झल्कइअ। ई जीवनके मात्र न, शिक्षा, स्वास्थ्य, राजनीति, अर्थतन्त्र आ व्यवस्थापनके भी आध्यात्मिक दृष्टिकोणसे पुनर्व्याख्या करेके प्रयास कएले हए। "वास्तविक विकास भौतिक सुविधासे मात्र सम्भव नहोइअ, आत्मिक शान्ति आ नैतिक आधारके साथके मिलनसे मात्र जीवन पूर्ण होइअ" पुस्तकके सार रहल हए। अइसे ई कृति सामाजिक आलोचना, दार्शनिक गहिराइ आ आध्यात्मिक स्पर्शके अद्वितीय मिश्रण बनल हए।

पुस्तकमे प्रत्यक्ष चरित्र नहोएलापर भी पूर्व आ पछिमके दू रूपक चरित्रके रूपमे प्रस्तुत कएलगेल हए। पूर्वके आध्यात्मिकता, योग, नैतिकता आ आत्मशान्तिके प्रतीक मानलगेल हए त पछिमके विज्ञान, प्रविधि, व्यवस्थापन आ भौतिक सम्पन्नताके प्रतिनिधि बनाएलजाइअ। ई दू चरित्रके प्रभाव परस्पर विरोधी भेलजइसन देखाइ परलापर भी पुस्तक ओकर मिलनसे मात्र समाज पूर्ण होएके सन्देश देइअ। पूर्वके कमजोरी गरिबी आ अन्धविश्वास हए त पछिमके कमजोरी आत्मिक खालीपन हए। ई चरित्रके प्रभावसे पाठकके सन्तुलन खोजेके, जीवनके द्वैतसे दूर समग्र दृष्टिसे बुझेके प्रेरणा देले हए।

पुस्तकके प्रभाव आ सार एकर सन्तुलनवादी दृष्टिकोणपर निहित हए। विज्ञान सुविधा देबले लेकिन शान्ति देनसकइअ, केवल अध्यात्म शान्ति देइअ मगर सुविधा देनसकइअ, दुनूके मिलनसे मात्र समाज आ जीवन पूर्ण होइअ, एसे शिक्षा, स्वास्थ्य, राजनीति, अर्थतन्त्र आ व्यवस्थापन सभी क्षेत्रमे पूर्वीय नैतिकता आ पछिमी दक्षताके संयोजन आवश्यक हए कहल चेतना जगबइअ, ई बातपर पुस्तक जोर देले हए। भौतिकता आ अध्यात्म, तर्क आ विश्वास, विज्ञान आ योगके साथ लेके मात्र स्थायी विकास सम्भव होइअ।

पुस्तकके तर्कसंगतता एकर तुलनात्मक दृष्टिकोणमे हए। पुस्तक देखबइअ कि – कौनो भी सभ्यता वा जीवनदर्शन पूर्ण नहए, पूर्वीय दृष्टिकोण आत्मिक शान्ति, नैतिकता आ आध्यात्मिक उन्नति देइअ लेकिन भौतिक सम्पन्नता आ प्राविधिक सुविधा दे नसकइअ। दोसरओर, पछिमीय दृष्टिकोण विज्ञान, व्यवस्थापन आ प्रविधिसे जीवनके सहज आ आरामदायी बनबइअ लेकिन आत्मिक खालीपन, तनाव आ सामाजिक विखण्डन लेअबइअ। एहीसे, पुस्तक दुनू दृष्टिकोणके मिलनके यथार्थ आ व्यावहारिक आवश्यकता मानइअ। एकर तर्क हए – शिक्षा, स्वास्थ्य, राजनीति वा अर्थतन्त्र कौनो भी क्षेत्रमे एकतर्फी दृष्टिकोण दीर्घकालीन समाधान दे नसकइअ। आत्मा आ शरीर जइसे, अध्यात्म आ विज्ञान भी अविभाज्य हए। इहे तर्कसंगत आधार पुस्तकके आदर्श मात्र नहोके व्यावहारिक जीवनके लेल भी सान्दर्भिक बनबइअ।

पूर्वीय दृष्टिकोणसे तुलना मूल्याङ्कनसे नेपाली शिक्षा प्रणालीमे महत्त्वपूर्ण योगदान पुगएले हए। ई नेपाली शिक्षामे सांस्कृतिक, सामाजिक आ भाषिक विविधताके ध्यानमे राखके प्रभावकारी शिक्षण विधि सब विकास करेला मद्दत कएले हए। पूर्वीय दृष्टिकोणसे पारम्परिक शिक्षण विधि सबसे अलग तरिकासे सिखेके प्रक्रियाके महत्त्व देले हए जहाँ विद्यार्थी सबके सहभागिता, आपसी सम्बन्ध आ सामूहिक प्रयासके प्राथमिकता देलजाइअ। ई सिखाइमे व्यवहारिकता आ सजीवता लेअबइअ, जेसे विद्यार्थी सबके आउरो सक्रिय आ आत्मनिर्भर बनबइअ। साथे, पूर्वीय दृष्टिकोण शिक्षक आ विद्यार्थीबीचके अन्तरक्रियाके बरियार बनाबेके उपाय सब सुझबइअ, जे सिखाइके गुणस्तरमे सुधार लेअबइअ। नेपाली शिक्षाके परम्परागत थिम सबसे बाहर निकालके नवीनतम आ सिर्जनात्मक शिक्षण तरिका अपनाबेला ई दृष्टिकोण सहयोग पुगएले हए। ई स्थानीय सन्दर्भसे मेल खाएवाला सामग्री आ गतिविधि सबके विकास करेला प्रेरित करइत शिक्षाके प्रभावकारिता बढएले हए। समग्रमे पूर्वीय दृष्टिकोणसे नेपाली शिक्षा प्रणालीमे सन्तुलित आ समृद्ध सिकाइ वातावरण सिर्जनता करेला बहुत लमहर भूमिका खेलले हए।

पूर्वीय दृष्टिकोणसे कएलगेल तुलना मूल्याङ्कनसे नेपाली शिक्षा आ संस्कृतिमे नयाँपन आ मौलिकता लेआएल हए। ई परम्परागत पछिमी दृष्टिकोणसे फरक तरिकासे ज्ञान, संस्कृति आ मूल्यके महत्त्वके उजागर कएले हए।

पूर्वीय दर्शनपर आधारित मूल्य आ सिद्धान्त सऽ जीवनके गहन अर्थ आ नैतिकताके साथ व्यवहार करेके तरिका सिखबइअ । ई दृष्टिकोणसे शिक्षा आ संस्कृतिमे चरित्र निर्माण, आत्मज्ञान आ समाजहितके मुख्य स्थान देइअ । पूर्वीय तुलना मूल्याङ्कनसे परम्परागत शिक्षण विधि विधिके सीमितता परिमार्जन करइत समुदाय आ सांस्कृतिक सन्दर्भसे मेल खाएवाला नयाँ सिखाइके उपाय सब विकास कएले हए। ई शिक्षक आ विद्यार्थीबीचके सम्बन्धके आउर सक्रिय आ समावेशी बनएले हए। ई नयाँ तरिका शिक्षा प्रणालीके नेपाली परिवेशमे बेसी सान्दर्भिक आ प्रभावकारी बनएलक । कुल मिलाके, पूर्वीय दृष्टिकोणसे कएलगेल तुलना मूल्याङ्कनसे शिक्षा प्रणालीमे नीतिगत सुधार, नैतिक विकास आ सांस्कृतिक संरक्षणमे महत्त्वपूर्ण योगदान पुगाबेके काम भेल हए।

पुस्तक शिक्षा, स्वास्थ्य, राजनीति, अर्थशास्त्र आ समाज जइसन क्षेत्र सबमे पूर्व आ पछिमके समन्वय केना कएल जासकइअ, एई विषयपर व्याख्या कएले हए। शिक्षा प्रणालीमे विज्ञान आ प्रविधिके साथे योग, ध्यान आ नैतिक शिक्षा समावेश होएके बातपर लेखक जोर देले छत। स्वास्थ्य क्षेत्रमे आधुनिक दबाइ आ प्रविधि मात्र नहोके, योग, ध्यान आ आयुर्वेदके प्रयोगसे आदमीके समग्र उपचार दे सकेके तर्क प्रस्तुत कएलगेल हए । राजनीति आ नेतृत्वमे दक्ष व्यवस्थापन (पछिमी सोच) आ इमानदारी तथा सत्यनिष्ठा (पूर्वीय सोच) दुनूके संयोजन आवश्यक हए कहके प्रष्ट कएलगेल हए।

अर्थतन्त्र आ उद्योग व्यवस्थापनके क्षेत्रमे पुस्तक स्पिरिचुअल म्यानेजमेन्टके अवधारणा अगाडि लेआएल हए । लेखकके मोताबिक व्यवसाय केवल नाफा कमाएके लेल मात्र न, समाज, वातावरण आ मानव कल्याणके लागि भी होएके चाहिँ। यदि व्यवस्थापनमे नैतिकता, अध्यात्म आ योगके जोड सकलजाई त कम्पनी सब दीर्घकालीन रूपमे सफल मात्र नहोके सामाजिक रूपमे उत्तरदायी भी बन सकइअ।

डा. मिश्रके पुस्तक ई बातपर जोर देइअ कि संसारके वास्तविक विकास ओतिघरि मात्र सम्भव होई जब पूर्व आ पछिम दुनूके सोच एकदोसरासे सिखी आ परस्पर आदान–प्रदान करी । पूर्व आध्यात्मिकता, नैतिकता, योग आ आत्मिक शान्तिमे सम्पन्न हए त पछिम विज्ञान, प्रविधि, धन आ व्यवस्थापनमे शक्तिशाली हए । यदि ई ज्ञान सऽ अलग अलग चलइत हए त दुनू अधुरा रही। पूर्वके कमजोरी भौतिक सम्पन्नताके कमी हए त पछिमके कमजोरी आत्माके खालीपन हए।

जइसे, एगो गरिब आदमी केवल भात कएलक त पेट भरजाई लेकिन शरीमे बल नआई। केवल दाल खाइ त स्वाद त आई मगर नपची। लेकिन दाल–भात साथे खएलापर पेट भी भरी आ देहमे ताकत भी आई। अइसही अध्यात्म (पूर्व) आ विज्ञान (पछिम) साथमे मिललापर जीवन पूरा होइअ।

विद्या विज्ञानं च धर्मश्च, यदा संगच्छते तदा
मानवस्य कल्याणाय मार्गः सुसम्यक् भवति।

ई मिलनसे समाजमे सन्तुलन आसकइअ । यदि आदमीके पेट भरल हए आ मन सन्तुष्ट हए त मात्र ऊ परिवार, समाज आ राष्ट्रके लेल कुछ सत्य काम करइअ।

लेखक प्रष्टसे कहइछत, पछिमी समाज बहुत भौतिक सम्पन्नता हासिल कएलक – मटर, उद्योग, पैसा, आधुनिक जीवनशैली । लेकिन भित्तर एगो खालीपन हए । आत्मा सन्तुष्ट नहए । ओहीसमय पूर्वी सभ्यता, भारतसहित, अध्यात्म, ध्यान, योग आ धर्ममे सम्पन्न रहे लेकिन भौतिक शक्ति नरहे। ओहीसे अब दुनू मिलके अगाडि बढनाइ जरुरी हए।

पछिमके पास कम्प्युटर आ मोटर हए, लेकिन मन अशान्त हए। पुरुबके साथ संन्यास आ साधु हए, लेकिन खाएला अन्न नहए। ओहीसे अब काम ई हए कि दुनूके जोडेके चाहिँ – मटर आ ध्यान, कम्प्युटर आ योग, भात आ दाल। जेतना सन्तुलन होई, ओतने जीवन सुन्दर होई।

आत्मबलं च विज्ञानं च, उभयं साधनं महत्
एकं विना न सम्पूर्णं, द्वयं संगम्य जीवितम्।

पूर्वके विशेषता योग आ अध्यात्ममे हए। योग केवल जिम – जइसन आसन नहए, बरु एसे आदमीके चेतनाके जागृत करइअ। योग शरीरके बरियार बनबइअ, मनके शान्त बनबइअ आ आत्माके शुद्ध बनबइअ। आदमी योग कएलापर

लोभ, क्रोध आ मोहके नियन्त्रणमे रखइअ । खेतमे आरी हए त पानी टिकइअ आ बाली हरियर रहइअ । यदि आरी फुटगेल त मन पानी बहइअ आ खेत सुखजाइअ । अइसही योग शरीर, मन आ आत्माके आरी हए। योग नहोएलापर मन टुटइअ आ जीवन सुख्खा होइअ ।

योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः ।

योग कहेके मतलब मनके चंचलताके रोकनाइ हए । आजके समाजमे तनाव, रोग आ बेचैनी बहुत हए । योग आ अध्यात्म आदमीके मन शान्त पारइअ, परिवारके झगडा घबइअ, समाजमे शान्ति लेअबइअ । ई व्यक्तिगत मात्र नहोके, सामाजिक जीवनके भी सन्तुलित बनबइअ । पछिमी सभ्यताके बल विज्ञान आ व्यवस्थापनमे हए । ऊलोग तर्क आ प्रयोगसे वस्तु सबके निर्माण कएलक । औद्योगिक क्रान्तिसे कारखाना, मसिन, रेल आ हवाइजहाज बनल । पछिमके विशेषता मतलब ऊ हरेक वस्तुके नापजोख करइअ आ नियन्त्रणमे लेइअ । लेकिन पछिमके कमजोरी आत्मिक जीवनके खालीपन हए । लमहर लमहर घर आ मोटर हए लेकिन परिवारमे मेलमिलाप नहए । पैसा हए लेकिन निन्द हेरागेल हए । विज्ञान सुविधा देलक लेकिन शान्ति देबे नसकल ।

विज्ञानं यन्त्रसंपन्नं, चेतनाविहीनं चेत्
सुखं न ददात्येव, दुःखमेव प्रसारयेत् ।

विज्ञानके प्रयोग अत्यन्त जरुरी हए, लेकिन जदि विज्ञान चेतना आ अध्यात्मबिनाके प्रयोगमे आएल हए त ऊ विनाश लेआई। परमाणु बम, वातावरण प्रदूषण आ युद्ध – ई सभी विज्ञान बिनाके अध्यात्मके परिमाण हए ।

मानव सभ्यताके यात्रा हजारो सालसे निरन्तर अगाडि बढरहल हए । ई यात्रामे पूर्व आ पछिम दू ध्रुवीय दृष्टिकोणके रूपमे विकास भेल हए । पूर्वीय जगत्, विशेष कके नेपाल, भारत, चीन आ जापान आत्मा, अध्यात्म, योग, ध्यान आ नैतिकताके जीवनके केन्द्रमे रखले हए त पछिम विज्ञान, प्रविधि, औद्योगिकीकरण, व्यवस्थापन आ भौतिक समृद्धिके प्रगतिके सूचक मानले हए । डा.अन्जय कुमार मिश्रके पुस्तक ई दुनू अलग दर्शनके बीचके सम्बन्धके गहिराइके साथ व्याख्या करइत सन्तुलनपर जोर देले हए । हुनका विचारमे मानव जीवन पूर्ण आ सन्तुलित होएके लेल पूर्वीय आध्यात्मिकता आ पछिमी विज्ञान दुनूके संयोजन अपरिहार्य होइअ । लेकिन प्रश्न उठले – ई विचार केवल आदर्शपरक दर्शन हए वा नेपाल जइसन देशमे व्यावहारिक रूपसे कार्यान्वयन करसकेके किसिमके व्यावहारिक खाका भी हए ? ई निबन्धमे इहे प्रश्नके आलोचनात्मक विश्लेषण कएलजाई ।

पूर्वीय दृष्टिकोण आत्मिक शुद्धता, योग आ ध्यानके केन्द्रमे रखइअ । एकर मूल ध्येय आदमीके लोभ, मोह आ क्रोधजइसन मानसिक अशुद्धिसे मुक्त कके आत्मिक स्थिरता देबाबेके हए । योग शरीरके बरियार बनाबइअ, ध्यान मनके स्थिर पारइअ आ धर्म जीवनके नैतिक आधार देवले । नेपालके गाँओघरमे अभी अइसन संस्कार जीवित हए । बिहान सबेरे पूजापाठ, साँझमे भजनकीर्तन, उत्सव–पबनीतेहारमे सामूहिकता ई सब पूर्वीय सोचके जर हए । लेकिन आध्यात्मिक अभ्याससे मात्र जीवन चल नसकइअ । भौतिक उत्पादनके कमी, रोजगारीके अवसरके न्युनता, शिक्षाके पहुँचके कमी आ पूर्वाधार विकासमे ढिलाइ पूर्वीय दृष्टिकोणके कमजोरीके रूपमे देखलजाइअ ।

पछिमी दृष्टिकोणके आधार तर्क, प्रयोग आ वैज्ञानिक अनुसन्धान हए । औद्योगिक क्रान्तिके बाद पछिमी समाज उत्पादनमे अभूतपूर्व वृद्धि कएलक । विज्ञान आ प्रविधिके प्रयोगसे यातायात, संचार, स्वास्थ्य, शिक्षा सभी क्षेत्रमे सुविधाके युग लेआएल । व्यवस्थापनसे संस्थागत संरचनामे दक्षता आ पारदर्शिता बढाएलगेल । नेपालमे भी पछिमी प्रविधिके प्रभाव देखल जासकइअ – मोबाइल फोन, इन्टरनेट, सामाजिक संजाल, मोटर, आधुनिक अस्पताल आ विद्यालय आदि आदमीके दैनिक जीवनमे परिवर्तन लेआएल हए । लेकिन पछिमी मूल्य आ मान्यता निरपेक्ष सकारात्मक नहए । एकरासाथे मानसिक तनाव, परिवार विखण्डन, सामाजिक सम्बन्धमे दूरी आ आत्मिक शून्यता भी बढल हए ।

नेपालके देखलापर ई देश न त पूर्ण पूर्वीय हए, न पूर्ण पछिमी । ग्रामीण क्षेत्रमे अभी भी परम्परागत धर्म, संस्कार आ आध्यात्मिक मूल्य बरियार हए त शहरी क्षेत्रमे आधुनिक प्रविधि, उपभोग्य संस्कृति आ व्यवस्थापन प्रवेश करचुकल

हए । लेकिन ई दुनूके बीच आवश्यक सन्तुलन नहए । इहे कारण नेपाल "संक्रमणशील समाज" के अवस्थामे हए । डा. मिश्रके कहल मोताबिक ही नेपालके भविष्य सुरक्षित आ स्थिर बनाबेला पूर्व आ पछिम दुनूके ज्ञानके संयोजन करनाइ आवश्यक हए । लेखक विभिन्न लेखमे भी पूर्वी व्यवस्थापनके फरक पृष्ठभूमिके उजागर करइत रहइछथिन । जैसे कि भुइँकपके समयमे नेपाली जौन धर्म मानलापर भी भगवान कहके ही सहायता खोजइअ । चाहे ल्यापटप किनेके समय कौनो भी धर्म मानेवाला ल्यापटपके प्रणाम (नमस्कार/अभिवादन) कके ही किनइअ, जइसन तर्क सब समेत देले देखलगेल हए (Narnaware & Kumar, 2022, Thakur & Chhetri, 2024)।

शिक्षा प्रणाली ई संयोजनके प्रमुख आधार होसकइअ । विद्यालयमे विज्ञान, गणित, प्रविधि सिखाबेके चाहिँ लेकिन साथे योग, ध्यान आ नैतिकताके भी अनिवार्य बनाबेके चाहिँ । अभी भी नेपालके विद्यालय सब पछिमी पाठ्यक्रमपर बेसी केन्द्रित हए जेसे विद्यार्थीके प्रवासी श्रमिक बनारहल हए । दोसरओर, केवल परम्परागत संस्कारपर आधारित शिक्ष देबेवाला विद्यालय सब आधुनिक प्रतिस्पर्धामे असक्षम युवा उत्पादन कररहल हए । ओहीसे शिक्षा प्रणालीमे पूर्वीय आ पछिमी मूल्य सबके सन्तुलित संयोजन जरुरी हए।

स्वास्थ्य क्षेत्रमे भी इहे बात लागू होइअ । आधुनिक प्रविधि, अस्पताल आ दबाइसे जीवन बचाबेके क्षमता बढएले हए। लेकिन मानसिक रोग, तनाव, असन्तोष आउर लमहर समस्या बनल हए । योग, ध्यान आ आयुर्वेदके स्वास्थ्य प्रणालीमे समावेश करसकलापर उपचार आउर समग्र आ प्रभावकारी होसकइअ । उदाहरणके लेल, अस्पताल केवल शल्यक्रिया वा दबाइ नदेके योगकक्षा, ध्यान सत्र आ जीवनशैली परामर्श भी उपलब्ध कराबेके चाहिँ।

राजनीतिक नेतृत्वमे पछिमी व्यवस्थापन आ पूर्वीय नैतिकता दुनूके आवश्यकता होइअ। पारदर्शिता, जबाबदेहिता आ दक्षता पछिमी व्यवस्थापनके उपहार हए । लेकिन इमानदारी, करुणा, सत्यनिष्ठा पूर्वीय मूल्य हए । नेपालमे भ्रष्टाचार आ अव्यवस्था काहे बढलई त उहाँ दक्षता त हई मगर नैतिकता नहई । दोसर ओर, धार्मिक वा आध्यात्मिक भाषण करेवाला नेतामे नैतिकता द देखाइ देबले लेकिन व्यवस्थापन आ पारदर्शिताके कमी होअले । एहीसे दुनू पक्षके संयोजन करनाइ जरुरी होअले।

अर्थतन्त्रमे भी ई द्वन्द्व स्पष्ट हए। उद्यमशीलता, प्रविधि आ प्रतिस्पर्धा पछिमी सोचके उपहार हए त सामाजिक न्याय, समुदाय–केन्द्रित विकास आ दान संस्कार पूर्वीय सोचके योगदान हए। नेपालमे उद्योगधन्दा समाज आ वातावरणके ध्यान नदेके केवल नाफा कमाएके हए त दीर्घकालीन विकास सम्भव नहोई । लेकिन केवल दान संस्कारसे भी दीर्घकालीन रोजगार सिर्जना नहोई । ओहीसे व्यवसायके सामाजिक उत्तरदायित्वसे जोडके जरुरत हए।

समाजमे शान्ति आ स्थायित्व लेआबेला परिवारके भूमिकाके बेवास्ता कएल नजासकइअ । पछिमी समाजमे परिवार विखण्डन गम्भीर समस्या बनल हए त पूर्वीय समाजमे परिवारप्रतिके निष्ठा अभी बरियार हए । लेकिन नेपालमे भी शहरीकरण आ प्रवासी श्रमके कारण परिवार विखण्डन बढइगेल हए। एकरा सन्तुलनमे राखेला आर्थिक–आत्मनिर्भरता (पछिमी आधार) आ सांस्कृतिक सम्बन्ध (पूर्वीय आधार) दुनूके जोडेके चाहिँ।

डा. मिश्रके विचारके आलोचनात्मक दृष्टिसे देखलापर, हुन आदर्शपरक पक्षमे बेसी केन्द्रित देखलजाइ छथिन । हुन पूर्व आ पछिमके संयोजनके आवश्यकता त देखएले छथिन लेकिन व्यावहारिक चुनौती सबके पर्याप्त चर्चा कएले नछथिन । नेपालके सामाजिक संरचना अभी भी जातीय विभाजन, लैंगिक असमानता आ पितृसत्तासे ग्रस्त हए। पूर्वीय दर्शन करुणा आ समानताके बात करइअ मगर व्यवहारमे जातीय विभेद आउर गहरा हए । पछिमी मूल्य लोकतन्त्र आ मानव अधिकारके शिक्षा देले हए मगर व्यवहारमे कार्यान्वयन अपूरा हए । ओहीसे केवल संयोजनके आदर्श प्रवचनसे मात्र पर्याप्त नहोई, संरचनागत सुधार आ नीतिगत दृढता आवश्यक होई। नेपालमे भ्रष्टाचार आ अव्यवस्था लमहर चुनौती बनल हए । पछिमी शैलीके व्यवस्थापन लेअएलापर भी नैतिकता नहोएसे भ्रष्टाचार बढइअ । पूर्वीय अध्यात्म लादलापर भौतिक विकास बिना बेरोजगारी नघटी । नेतृत्वमे नैतिक साहस नहोएलातक

संयोजन केवल पुस्तकमे मात्र सीमित होई । एहीसे डा. मिश्रके पुस्तक देले सन्देश मूल्यवान होएलापर भी व्यावहारिक चुनौती सबके गहन विश्लेषण होएके अभी भी बाँकी हए।

नेपालके समृद्ध आ स्थिर बनाबेला पूर्वीय आध्यात्मिकता आ पछिमी विज्ञान दुनू आवश्यक हए । केवल पछिमी प्रविधिके भर परलासे आत्मिक शून्यता बढी । केवल पूर्वीय अध्यात्ममे टिकके बैठलापर गरिबी आ अशिक्षा नहटी । दुनूके मिलएलापर मात्र विज्ञान सुविधा देई आ अध्यात्म सन्तोष दी । इहे सन्तुलन जीवनके पूर्ण आ समाजके स्थिर बनासकइअ । नेपालके भविष्य इहे सन्तुलनमे निहित हए।

पूर्वीय दृष्टिकोणसे कएलगेल तुलना मूल्याङ्कनके कुछ कमजोरी भी हए । पहिल, ई दृष्टिकोण कतिपय अवस्थामे परम्परागत मान्यतापर सीमित रहसकइअ आ आधुनिक शिक्षण पद्धतिसबसे मेल नखाएके होसकइअ । दोसर, ई प्रायः सांस्कृतिक आ सामाजिक विविधताके पूर्णरूपमे समिट नसकेके सम्भावना होअले, जेसे स्थानीय आवश्यकतापर आधारित व्यावहारिक समाधान सऽ विकास करेमे समस्या उत्पन्न होसकइअ । तेसर, पूर्वीय दृष्टिकोणपर विश्लेषण कएलापर व्यावहारिक आ वैज्ञानिक प्रमाणसबके कमीसे एकरा कमजोर बनबइअ । चौथा, ई दृष्टिकोणसे शिक्षक आ विद्यार्थी सबके क्षमता आ स्रोतके अभावके कम कके देखेके सम्भावना होइअ, जे सिखाइके गुणस्तरमे बाधक होखले। पाँचमा, मूल्याङ्कनमे पारदर्शिता आ मानकीकरणके अभावसे नेपालके बहुभाषिक आ बहुसांस्कृतिक परिवेशमे सही मूल्याङ्कन कार्यान्वयनमे चुनौती पुगबइअ । अन्ततः, पूर्वीय दृष्टिकोण कभिकभार नयाँ विचार आ प्रविधिके प्रयोगमे ढिलाइ करेके आ परम्परागत शिक्षण विधिसबके बहुत बेसी प्राथमिकता देबेके होएलासे आधुनिक सिखाइ प्रविधि सऽ के उपयोगमे बाधा पुगासकइअ । अइसन सीमितता मूल्याङ्कन विधिके प्रभावकारिता घटबइअ।

पुस्तक पठन आ अभ्यासके लागि उपयुक्त हए वा नहए, ई प्रश्नमे, ई पुस्तक पूर्वी दर्शन आ परम्परागत मूलय सबके समिटइत नेपाली तथा पूर्वीय सामाजिक सन्दर्भमे तुलनात्मक विश्लेषण कएले हए । एसे पाठकके अपन सांस्कृतिक, सामाजिक आ दार्शनिक पृष्ठभूमि बुझेमे सहयोग पुगाई । पुस्तक जीवनमे नैतिकता, आध्यात्मिकता आ समाज सेवा जइसन महत्त्वपूर्ण पक्ष सबके महत्त्वके प्रस्तुत करइत नयाँ दृष्टिकोण प्रदान करइअ । ई पाठकके समाज आ व्यक्तित्व विकासतर्फ प्रेरित करइअ आ अपना सोच तथा व्यवहारमे परिवर्तन लेआसकेवाला क्षमतामे वृद्धि करइअ । पुस्तकके विश्लेषणशक्ति आ तुलनात्मक दृष्टिकोण पाठ्यक्रम, दर्शन आ सामाजिक संरचनामे गहन समझ विकास करी। ई पूर्व आ पछिमी विचारधाराबीचके अन्तर, सम्वाद आ साझा मूल्य निर्धारणमे योगदान पुगाई। आधुनिक शिक्षादीक्षा आ समाज सुधारमे पुस्तक उपयोगी सुझाव सब देइअ।

ई पुस्तक नेपाली पठनपाठनके लागि एगो मौलिक आ आवश्यक स्रोत हए। ई केवल यथार्थ ज्ञान मात्र नदिई, वल्कि हमनीके यथार्थ जीवनमे अपना संस्कृतिके केना सम्बोधन करेके, से सिखबइअ। ई व्यक्तिगत तथा सामाजिक विकासके लेल सही मार्ग निर्देशन करइअ । अदभूत तरिका आ दृष्टिकोणके कारण ई नयाँ सोच आ आध्यात्मिक चेतना जगाबेमे मद्दत करइअ, जे हमनीके जीवनमे सकारात्मक प्रभाव पारइअ।

पुस्तक पूर्वके आध्यात्मिकता, योग, ध्यान आ नैतिकताके साथे पछिमके विज्ञान, प्रविधि तथा व्यवस्थापनके समिटके दुनू दुनियाके सन्तुलन आ समन्वयके आवश्यकतापर जोर देले हए। एसे पाठक अपन व्यक्तिगत जीवन आ समाजके प्रगतिके लागि दुनू पक्षके महत्त्व बुझेके मोका प्राप्त करी। पुस्तक भौतिक सामग्री आ आध्यात्मिकता बीचके अन्तर आ ओकर मेलसे जीवनके केना पूर्ण बनाएल जासकइअ, एकरा स्पष्ट रुपसे देखएले हए।

पुस्तक साहित्य, जीवन आ विश्वग्रामके सामाजिक व्यवस्थापनमे गम्भीर योगदान पुगएले हए। साहित्यिक क्षेत्रमे, ई पछिमा चिन्तनके प्रभुत्व रहल वैश्विक विमर्शमे पूर्वीय दर्शन, साहित्यिक परम्परा आ आलोचनात्मक निष्कर्ष सबके एक सशक्त वैकल्पिक दृष्टिकोणके रूपमे स्थापित कके विचारधाराके विविधता लेआएल हए । जीवनके सन्दर्भमे,

ई ग्रन्थ भौतिकवाद आ व्यक्तिवादसे उत्पन्न आधुनिक संकटके बीच पूर्वीय मूल्य मान्यता सब जैसे सादगी, आन्तरिक शान्ति, सामुदायिक सदभाव आ आध्यात्मिकता जइसन सार्वभौमिक जीवन मूल्य सबके पुनरावलोकन करेके सिखएले हए । विश्वग्रामरुपी आधुनिक समाजमे सामाजिक व्यवस्थापनके सन्दर्भमे, ई सामूहिक कल्याण, प्रकृतिके साथे सामंजस्य, सहिष्णुता आ वसुधैव कुटुम्बकम्‌ जइसन पूर्वीय अवधारणा सबके वैश्विक समस्या सऽ जैसे भ्रष्टाचार, असंतुलन आ नैतिक पतनके समाधानके रूपमे प्रस्तावित करइअ। अइसे, ई पुस्तक एकपक्षीय दृष्टिकोणके मेटबइत एगो समग्र, सन्तुलित आ मानवीय दृष्टिकोण प्रदान कके विश्वबासीके चिन्तनके समृद्ध बनाबेके महत्त्वपूर्ण काम कएले हए।

पुस्तक साहित्य, जीवन आ विश्वग्रामके सामाजिक व्यवस्थापनमे गहन योगदान पुगएले हए। साहित्यिक क्षेत्रमे ई पछिमी प्रभुत्व रहल वैश्विक चिन्तनमे पूर्वीय दर्शन, मूल्य मान्यता आ व्यवहारके महत्त्वपूर्ण तुलनात्मक ढाँचाके रूपमे प्रस्तुत कके वैचारिक विविधताके समृद्ध बनएले हए । ई तुलनात्मक अध्ययन आ पूर्वी साहित्यिक आलोचनाके नयाँ आधार देइत साहित्यिक मूल्याङ्कनके लेल पूर्वीय सौन्दर्यशास्त्र, रससिद्धान्त आ आध्यात्मिकताके नयाँ निष्कर्षके रूपमे स्थापित कएले हए। जीवनके लेल ई पुस्तक आधुनिक भौतिकवादी जीवनशैलीबीच सादगी, सन्तुष्टि, अहिंसा, करुणा जइसन पूर्वीय जीवनमूल्य सबके पुनः स्थापना कके आन्तरिक शान्ति आ आध्यात्मिक विकासके बढावा देले हए । विश्वग्रामके सामाजिक व्यवस्थापनमे ई सामूहिक कल्याण, सहिष्णुता आ वसुधैव कुटुम्बकम्‌ जइसन पूर्वीय अवधारणा सबके मार्फत विविधताभित्र सामंजस्य, धर्म आ सेवामे आधारित नेतृत्व आ प्रकृतिके साथे सन्तुलन कायम राखेवाला टिकाउ विकासके मार्ग प्रशस्त कएले हए। एई प्रकार, ई पुस्तक एकपक्षीय दृष्टिकोणके मेटबइत समग्र आ सन्तुलित दृष्टिकोण प्रदान कके शान्तिपूर्ण विश्वग्राम निर्माणमे महत्त्वपूर्ण भूमिका निर्वाह कएले हए।

विश्व दृष्टिकोणसे शिक्षा, सामाजिक विकास आ नैतिक परिवर्तनके लेल उपयोगी साबित होइअ। ई आदमीके भौतिक प्रगति मात्र नहोके, आन्तरिक शान्ति आ जीवन मूल्य सबके खोजीमे प्रेरित करइअ । पुस्तक व्यवसाय, शिक्षा आ समाजमे नैतिकता जोडके दीर्घकालीन संतुलन आ विकासके लेल गहन सोचेला बाध्य बनाई। साहित्यिक भाषाशैली सरल रहलापर भी गम्भीर विषयके समिटले ई विभिन्न क्षेत्रके पाठकलोगके विचार करेके प्रेरणा देई । समग्रमे, डा. मिश्रद्वारा लिखित ई पुस्तक आधुनिक युगमे पुरुब आ मछिमबीच सन्तुलन कायम राखेके लागि एक अमूल्य स्रोत हए। पुस्तकके मूल सन्देश इहे हए कि ई दू ध्रुवीय मूलयसबके बीच संयोजन आवश्यक हए।

प्रत्येक समाज कानुनी व्यवस्था आ एकर प्रक्रियामे निर्भर होइअ, साथे ई जनताके नैतिकतापर भी निर्भर होइअ । वर्तमान नेपालमे, कानुनी कार्यवाहीके आधार तय करेला नैतिकता खाली बर्तन जइसन देखाइ देइअ । समाज आ देशके कौनो भी संरचनाके संरक्षण आ प्रबर्द्धन करेला, लेकिन नैतिकताके अभावमे, एसियामे कानुन आ कानुनी गतिविधि सब भ्रष्टाचार, असंतुलन आ अनैतिक कानुनके परिणामस्वरूप ढल जाइअ। हरेक समाज कानुनी प्रावधान आ एकर प्रक्रियापर निर्भर रहलई, साथसाथ जनताके नैतिकतापर भी निर्भर रहलई । वर्तमान नेपालमे कानुनी कारवाही चलाबेला आवश्यक नैतिकताके अवस्था एकदम नाजुक आ खाली देखलजाइअ। समाज आ देशके कौनो भी संरचनाके संरक्षण करेला आ अगाडि बढाबेला, लेकिन नैतिकताके अभावमे, एसियामे कानुन आ कानुनी कारवाही सब भ्रष्टाचार, असंतुलन आ अनैतिकताके कारण असफल होजाइछई।

समग्रमे, पुस्तक पूर्वीय अध्यात्मक आ पछिमी विज्ञानबीचके संयोजनके मानव जीवन आ समाजके पूर्ण विकासके लेल अपरिहार्य देखएले हए। पूर्वीय सोचबिनाके विज्ञान विनाशकारी बन सकइअ त पछिमी प्रविधिबिनाके अध्यात्मक अधुरा होइअ । दुनूके मिलनसे मात्र समाजमे शान्ति, सन्तुलन आ स्थायी विकास सम्भव होई, इहे विचार पुस्तकके मुख्य सन्देश हए । पूर्वीय आध्यात्मिकता आ पछिमी विज्ञानबीचके सन्तुलित संयोजनसे मात्र समाजमे शान्ति, सन्तुलन आ स्थायी विकास सम्भव होई।

सन्दर्भसूची

Blair, G. (2023). B*ook review: A reference book on comparative assessment from the Eastern approach.* Intellectual's Book Palace. https://doi.org/10.5281/zenodo.7748874

Chhetri, S. (2023). A reference book on comparative assessment from the Eastern approach: Book review. *Journal of Emerging Technologies and Innovative Research* (*JETIR*), *10*(4), d636. https://www.jetir.org/view?paper=JETIR2304388

Mishra, A. K. (2022a). *A reference book on comparative assessment from the Eastern approach*. Intellectual's Book Palace. https://doi.org/10.5281/zenodo.7113124

Mishra, A. K., & Aithal, P. S. (2022b). Considerations and conundrums that confronted throughout the recruiting process. *International Journal of Research–Granthaalayah, 10*(11), 18–31. https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v10.i11.2022.4891

Mishra, A. K., & Aithal, P. S. (2023). Building ethical capital through human resource management. *International Journal of Management, Technology and Social Sciences*, *8*(1), 1–15. https://doi.org/10.5281/zenodo.7519862

Narnaware, N. B., & Kumar, A. D. (2022). Educational development and evaluation: A case study from Nepal. *Saudi Journal of Engineering and Technology*, *7*(9), 513–519. https://doi.org/10.36348/sjet.2022.v07i09.001

Shrestha, E. B. (2025, June 17). Chapter review: Human development: Vision of yoga. In *Proceedings of the National Education Conference 2082. Ministry of Education and Culture, Madhesh Province, Nepal*. https://doi.org/10.5281/zenodo.15678944

Thakur, R., & Chhetri, S. (2024). Life and learning of Nepal's best scientist: Insights from the untimely demise. *Journal of Advanced Research in English & Education*, *9*(1), 1–7. https://doi.org/10.24321/2456.4370.202401